माटी के लालू

–संजय सुमन (वेबसाइट सम्पादक)

सर्वधर्म को मानने वाले, गरीब, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों (मुस्लिम) व दलितों के मसीहा

लालू प्रसाद यादव आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। इस शख्सियत को पहचानने के लिए इसकी केवल एक झलक (बाल, गोल मटोल चेहरा और गांव की मीठी भाषा) तथा इसका पहला नाम (लालू) ही काफी है। ये इसके व्यक्तित्व के परिचायक बन चुके हैं जिससे इसे सफल रेलमंत्री मैनेजमेंट गुरु को आसानी से पहचाना जा सकता है। कोई इस नाम (लालू) को स्नेह से व्यक्त करता है, तो कोई मजाक से, लेकिन सभी इसे इतिहास का प्रतिबिम्ब मानते हैं। लालू प्रसाद की जीवनगाथा उन सभी संघर्षों, उतार–चढ़ाव व घटनाओं का साक्षी रही है जिनसे वर्तमान समय का इतिहास भरा पड़ा है जैसे जे.पी आंदोलन, बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में, सफल मैनेजमेंट गुरु रेलमंत्री के रूप में वगैरह—वगैरह। इन सारी कालजयी घटनाओं में बड़ी बात ये रहीहै कि लालू प्रसाद जैसे थे, वैसे ही रहे। सर्वधर्म को मानने वाले, गरीबों–दुखियों की सेवा करने वाले, अल्पसंख्यकों (मुसलमानों) के पक्षधर, रेलवे को घाटे से उबारने के प्रतीक।

अपने करिश्माई नेतृत्व तथा जनसाधारण में अपनी गहरी पैठ के लिये प्रसिद्ध लालू प्रसाद यादव केन्द्र की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन –1 सरकार में रेलमंत्री रहे हैं।

1989 के सामान्य तथा राज्य के विधानसभा चुनावों में उन्होंने राष्ट्रीय मोर्चा गठबंधन का नेतृत्व किया तथा वह एक प्रमुख राजनीतिक नेता बन गये। 1990 के विधानसभा चुनावों में जब उनका गठबंधन सत्ता में आया तब लालू प्रसाद मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुए। उन्होंने अपना पूरे पाँच वर्ष का कार्यकाल पूरा किया। अगले विधानसभा चुनावों में उन्होंने अपने बल पर पूर्ण बहुमत प्राप्त करके बहुत से राजनीतिक विश्लेषकों को चकित कर दिया।

जब लालू जी पहली बार बिहार के मुख्यमंत्री (1990 – 95) अवधि के लिए बने तो उनके इस शासनकाल के प्रारम्भिक अवधि में काफी सुधारात्मक कार्य होने लगे जिसके कारण उनकी ख्याति और बढ़ने लगी। इसकी बढ़ती ख्याति एवं प्रसिद्धि तत्कालीन विरोधी राजनेताओं के गले नहीं उतर रही थी। फलस्वरूप विरोधियों ने श्री लालू जी (तत्कालीन मुख्यमंत्री) पर चारा घोटाला जैसे मुद्दा उठाया उन्हें बदनाम करने की कोशिश की, जबकि हकीकत में स्वयं लालू जी ने इस घोटोले को उजागर किया।

लालू प्रसाद ने दबे–कुचले समाज के लोगों को स्वर दिया और राबड़ी देवी के साथ बिहार पर पंद्रह वर्षों तक राज किया। इस अवधि में उन्होंने समाज के पिछड़े व दबे–कुचले लोगों में स्वाभिमान का माद्दा भर दिया। अब यह वर्ग एक प्रकार से बिहार की शीर्ष राजनीति का स्थायी तत्व बन चुका है। लालू प्रसाद स्वत: स्फूर्त परिस्थितियों के कारण बिहार के राजनीतिक फलक पर छा गए। इसके बाद बिहार की जनता के एक बड़े हिस्से में उन्होंने जो राजनीतिक चेतना जागृत की उसकी मिसाल नहीं मिलती।

केन्द्र की वी.पी.सिंह सरकार ने जब अन्य पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था लागू की तो लालू प्रसाद ने बतौर मुख्यमंत्री इसे बिहार में अमली जामा पहनाकर सामाजिक न्याय के आंदोलन को एक नयी ऊंचाई दी। 1995 तक आते–आते सुदूर गांव में भी पिछड़ी जातियों के युवा अपने राजनीतिक अधिकार को समझने लगे थे। वे अपनी बात मुखर होकर रखने लगे थे।

लालू प्रसाद ने मुसलमानों में भी लोकप्रियता हासिल की। वे अक्टूबर 1990 में लालकृष्ण अडवाणी की रथ यात्रा को रोक कर, उन्हें गिरफ्तार करके मुसलमानों के भी सच्चे हमदर्द बने। **मुसलमान मतदाताओं के वोट राजनीतिक दल एक उपभोक्ता सामग्री की तरह देखते हैं। चुनावों से पहले जो जितना ज्यादा मुसलमानों पर जुल्म और उनके पिछड़ेपन के बारे में बोले वही उनके वोट ले जाए। यह सरासर मुस्लिमों पर अन्याय है और उनका अपमान भी है क्योंकि वे भी भारत के वैसे ही सम्मानित नागरिक हैं जैसे कि अन्य सम्प्रदायों के लोग। लालू जी ऐसे पहले व्यक्ति हैं जो मुसलमानों का उनका सम्मान दिलाने हेतु पुरजोर कोशिश करते रहते हैं। अल्पसंख्यकों (मुसलमानों) को बराबरी का सम्मान देने के लिए लालू प्रसाद की पूरी दुनिया में प्रशंसा की जाती है।** लालू प्रसाद ने गांव जवाहर के लोगों की बोली, शैली और खानपान को अपनाया। वे कभी पिछड़ों के घर दाल–भात खाने पहुँच जाते, तो कभी किसी दलित बच्चे के बाल काटने लगते। इस तरह लालू प्रसाद ने लोगों में अपनत्व की भावना जागृत की।

श्री लालू प्रसाद/श्रीमती राबड़ी देवी द्वारा किए गए प्रमुख कार्य—

- 'सुअर चराने वालों, बकरी चराने वालों पढ़ना–लिखना सीखो' के नारे को साकार करने के लिए चरवाहा विद्यालय का विचार सामने रखा।
- रिक्शा चालकों के लिए रैनबसेरा योजना शुरू की जिससे हजारों रिक्शा चालकों को छत नसीब हुई।
- मछुआरों के टैक्स माफ कर उन्हें राहत दी।
- ताड़ी बेचने वाली पासी जाति को राहत देते हुए ताड़ी पर से टैक्स हटाया।
- भूमिहिनों को जमीन देने की योजना शुरू करके लालू जी ने बेघरों के घर के सपने को साकार करने की कोशिश की।
- पहले मुख्यमंत्री हैं, जिन्होंने सरकारी नौकरियों में अनुसूचित जाति/पिछड़ी जाति/अत्यंत पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण प्रतिशत को बढ़ाया।
- बीएन मंडल वि.वि., मधेपुरा: वीर कुंवर सिंह वि.वि. आरा; नालन्दा खुला वि.वि. पटना; जयप्रकाश नारायण वि.वि., छपरा, मौलाना मजहरूल हक अरबी एवं फारसी वि.वि., पटना एवं गोपालगंज में सैनिक विद्यालय की स्थापना की।
- राज्य अल्पसंख्यक आयोग को कानूनी अधिकार प्रदान किया।
- राज्य महिला आयोग का गठन एवं महिला नियोजनालय की स्थापना की।
- 23 वर्षों के बाद पहली बार राजद शासन में पंचायती चुनाव सम्पन्न हुए।
- 50 हजार से अधिक स्थाई शिक्षकों की प्रतियोगिता परीक्षा द्वारा नियुक्ति हुई।

- पटना भाहर में पहली बार. फ्लाई ऑवर (चिड़ैयाटाड पुल सहित) का निर्माण कार्य हुआ।

इस तरह लालू प्रसाद ने बेजुबान पीढ़ी (दबे-कुचले) को जुबान दी तथा सामाजिक न्याय के आन्दोलन को आगे बढ़ाने में सफलता प्राप्त की।

भारतीय रेलवे का वित्तीय कायापलट

श्री लालू प्रसाद को भारतीय रेल, जो लगभग दिवालिया होने के कगार पर था, के वित्तीय कायापलट का श्रेय जाता है। इस संबंध में जो चीज उनके कार्य को प्रशंसनीय बनाती है वह यह है कि उन्होंने यात्री किराये में बिना वृद्धि किये रेलवे के लिये राजस्व के कुछ नये तथा महत्वपूर्ण स्रोत खोज निकाले। जब लालू जी ने पदभार ग्रहण किया था तब रेलवे केवल घाटा देने वाली संस्था बनकर रह गया था। राकेश मोहन समिति ने रेलवे को 'सफेद हाथी' की संज्ञा दी थी तथा यह भविष्यवाणी भी की थी कि 2015 तक 61,000 करोड़ के घाटे के साथ दिवालिया हो जायेगी। इन सब भविष्य वाणियों को धता बताते हुये लालू जी के नेतृत्व में रेलवे ने 110 बिलियन रुपयों का अभूतपूर्व सरप्लस दर्ज किया था।

लालू जी के कार्यों से प्रभावित भारतीय मैनेजमेंट संस्थान, अहमदाबाद ने लालू जी द्वारा भारतीय रेलवे की कायापलट करने के चमत्कार का अध्ययन किया ताकि भविष्य में उनके छात्र भी इससे सीखें तथा लाभ उठायें। प्रो. जी. रघुराम,जो IIMA की फैकल्टी के एक सदस्य हैं, रेलवे की इस चमत्कारी प्रगति पर पहले ही अध्ययन कर चुके हैं। 18 सितम्बर, 2006 को लालूजी ने मैनेजमेंट छात्रों को तथा मैनेजमेंट संस्थान के सदस्यों को लैक्चर दिया तथा बताया कि किस प्रकार रेलवे ने अभूतपूर्व वृद्धि तथा प्रगति दर्ज की। **अंग्रेजी दैनिक इंडियन एक्सप्रेस** द्वारा कराये गये सर्वेक्षण का निष्कर्ष यह निकला था—

- रेलवे का वित्तीय कायापलट अविश्वनीय आँकड़ों द्वारा समर्पित, प्राप्त किये जा सकने योग्य तथा वास्तविक है।
- कायापलट साधारण पुनर्निर्माण से भी ऊपर है।
- कायापलट यात्री या माल भाड़ें में बिना कोई वृद्धि किये किया गया है।
- यह कायापलट लालूजी के नेतृत्व में हुआ है।

दिल्ली में लोग टिप्पणी करते हैं कि अकेले आए हो चार ही संसद हैं, क्या कर लोगे। हम कहते हैं कि हनुमान जी ने अकेले ही लंका जला दी थी।

—श्री लालू प्रसाद

रेलमंत्री रहते हुए श्री लालू प्रसाद जी ने भारतीय रेलवे में काफी सुखदायक एहसास दिलाया—

- उन्होंने लगातार रेल किराया घटाया।
- गरीबों के लिए आधे से भी कम किराये में 'गरीब रथ' चलाया ताकि गरीब तबके के लोग भी एयर कंडिशन में शान से चल सकें।
- गरीब रथ चलाकर उन्होंने गरीबों के दिल में अपनी खास जगह बनायी है।
- भारतीय रेल बजट में लगातार मुनाफा दिलाकर देश/विदेशों में मैनेजमेंट गुरु के नाम से जाने गए।
- श्री लालू प्रसाद जी के अथक प्रयासों से भारतीय रेलवे को मलेशिया के प्रोजेक्ट हेतु एक बिलियन डॉलर का काम मिला।
- रेलवे की नौकरियों के लिए मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों का सम्मान करते हुए मदरसों की डिग्री स्वीकार करने का फैसला किया।
- माननीय श्री लालू जी के प्रयासों के द्वारा बिहार बाढ़ पीड़ितों के लिए 1000 करोड़ रुपये से अधिक की केन्द्रीय सहायता उपलब्ध कराई गई।
- रेलमंत्री राहत कोष से बिहार में बाढ़ पीड़ितों के लिए 90 करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध करायी तथा बाढ़ पीड़ित व्यक्तियों के लिए मुफ्त खान-पान की व्यवस्था करायी।
- उत्तर भारतीयों पर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना कार्यकर्ताओं द्वारा हमले की श्री लालू प्रसाद जी द्वारा जोरदार निंदा की गई।
- श्री लालू जी द्वारा रेलवे कर्मचारियों के बेटों को नौकरी देने पर विचार किया।
- रेलवे को पिछले पाँच वर्षों में कुल मिलाकर 90 हजार करोड़ रुपये से अधिक का मुनाफा कराया।
- वृद्ध महिलाओं को सभी श्रेणियों की टिकटों में 30% की छूट को बढ़ाकर 50% किया (2008—09 के बजट में)।
- लाइसेंसधारी कुलियों को गैंगमैन के रूप में प्रोन्नत किया गया। गैंगमैन को गैटमन बनाया गया।
- रेलवे में उर्दू को बढ़ावा दिया गया। ग्रुप-डी की परीक्षा उर्दू में भी कराने का फैसला लिया गया।
- छात्राओं को स्नातक स्तर और छात्रों को 12वीं कक्षा तक मासिक सीजन टिकट मुफ्त दिया गया।
- रेलवे में अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ बनाने की घोषणा की गई।
- रेलवे सुरक्षा के लिए 5700 सिपाहियों की भर्ती की गई।
- रेलवे किराया घटाकर लाभ कमाया।
- रेलवे ने 8% की दर से विकास किया।
- रेल दुर्घटनाओं में कमी आई।
- आम आदमी पर बोझ नहीं डाला।

लालू प्रसाद जी की रेल बजटों की विशेषताएँ

2004—05 मट्ठा कोला, कुल्हड़, खादी, नीम के दांतून पर जोर रहा। हर स्टेशन और ट्रेन में कुल्हड़ अपरिहार्य हो गया। कुलियों को साल में एक बार पत्नी सहित फ्री पास यात्रा की सुविधा दी।

2005—06 इस बजट में लालू नॉमिक्स की नींव पड़ी। ट्रेनों में कट एण्ड पेस्ट पॉलिसी का उपयोग किया। जो ट्रेन पचास फीसदी खाली चलती थी, उसकी बोगियों की संख्या घटाई। इसके बाद रेलवे में चोरी रोकने के लिए शुरुआत हुई। माल लदान पर खास ध्यान दिया गया और बैंगनों का लोड बढ़ा दिया गया। इससे रेलवे का फण्ड वैलेंस बढ़कर 8000 करोड़ रुपए हो गया। गरीब रथ चलाने का फैसला किया गया।

2006—07 लालू जी ने रेलवे को दुधारू गाय की संज्ञा देते हुए कहा कि यदि गाय को दुहोगे नहीं तो बीमार पड़ जाएगी। बैगन टर्न राउंड घटाए। रेल भूमि विकास प्राधिकरण के जरिए रेलवे भूमि का व्यावसायिक उपयोग शुरू हुआ। अधिक क्षमता वाले कोच का निर्माण शुरू हुआ। कंटेनर व्यवसाय में निजी क्षेत्रों को प्रवेश और डबल स्टेक कंटेनर ट्रेन भारत में पहली बार चली। रेलवे का मुनाफा 16 हजार करोड़ तक जा पहुँचा।

2007—08 एकीकृत पूछताछ सेवा की देशव्यापी शुरूआत। बैगनों के टर्न राउंड में भारी कमी। पहली बार जीरो लेवल से टाइम टेबल बना। ट्रेनों के यात्रा समय में कमी की गई।। खानपान पूर्ण रूप से IRCTC को सौंप दिया गया। पोस्ट ऑफिस और पेट्रोल पंपों पर टिकट की बिक्री शुरू हुई। रेलवे का फण्ड वैलेंस 20 हजार करोड़ तक पहुँचा।

2008—09 वरिष्ठ नागरिकों को, अशोक चक्र पाने वाले सैनिकों, एड्स पीड़ित छात्र-छात्राओं को किरायों में छूट प्रदान की गयी। रिक्त पड़े गैंगमैन के पदों पर कुलियों की नियुक्ति का उपबंध किया गया। ओवरनाइट मेल एवं एक्सप्रेस गाड़ियों में डिसप्ले बोर्ड लगवाने का विचार किया गया। लाभांश 25 हजार करोड़ रुपए।

2009—10 रेल दुर्घटनाओं में कमी, यात्री किराए में कमी, छठे वेतन आयोग की सिफारिशें लागू, 43 नई रेल गाड़ियों को चलाने का प्रावधान, त्रिपुरा की राजधानी अगरतला को रेल लाइन से जोड़ा गया, रेल पहिया निर्माण छपरा में तेजी पर, मढ़ौरा तथा मधेपुरा में डीजल व बिजली रेल इंजन कारखाने का कार्य भी शीघ्र शुरू करने का लक्ष्य।

लालूजी के प्रति बढ़ती अन्तर्राष्ट्रीय रुचि

अनेक स्रोतों से यह विदित हो चुका है कि हावर्ड तथा HEC, मैनेजमेंट, फ्रांस की भाँति बहुत सी विदेशी कम्पनियाँ, विश्वविद्यालयों तथा दूतावासों ने लालूजी के बारे में अत्यधिक जानकारी प्राप्त करने की लालसा दिखाई। जब श्री लालू यादव केन्द्र सरकार में रेलमंत्री बने थे, तब बहुत से दूतावासों तथा विदेशी विश्वविद्यालयों ने लालूजी को अपने यहाँ भ्रमण का न्यौता दिया था तथा उनके बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया। संयुक्त राज्य अमरीका के 50 से अधिक प्रबन्धकीय विद्यार्थी भारतीय रेल के आर्थिक उत्थान पर लालू जी के भाषण को सुनने के लिए भारत आए। आगन्तुक समूह में शामिल होने वाले 35 विद्यार्थी जो कि मैकुमबस स्कूल ऑफ बिजनेस, ऑस्टिन स्थित टेक्सास विश्वविद्यालय से थे। इसके अतिरिक्त 22 विद्यार्थी वर्जिनिया विश्वविद्यालय के डार्डेन स्कूल ऑफ बिजनेस से थे। (लालू जी को शिकागो विश्वविद्यालय, स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय और हावर्ड बिजनेस स्कूल द्वारा आमंत्रित किया गया था। हावर्ड बिजनेस स्कूल तथा वार्टन बिजनेस स्कूल के विद्यार्थी दिसम्बर 2006 के शुरू में ही बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री तथा राजद नेता के भाषण में रुचि दिखाने आए थे।

'एशिया टाइम्स' से ऑन लाइन बातचीत करते हुये लालूजी ने कहा था 'सारे संसार के लोग यह जानना चाहते हैं कि एक ग्वाले के पुत्र ने इतनी उन्नति किस प्रकार की। उनका मेरे बारे में जानने की उत्सुकता भारतीय लोकतंत्र की विजय है।'

अल्पसंख्यकों (मुसलमानों) को बराबरी का सम्मान देने और रेलवे का कायाकल्प करने के लिए लालू जी की पूरी दुनिया में प्रशंसा की जाती है।

लालू जी के विरोधियों के प्रश्न-उत्तर

प्रश्न— बिहार में लालू जी/राबड़ी जी के शासन में विकास नहीं हुआ?

उत्तर— शायद, आपको इस लेख को पढ़ने के बाद आपकी समस्या खत्म हो जाएगी।

प्रश्न— अक्सर सबसे पहले सवाल किए जाते हैं लालू जी के चारे घोटाले की?

उत्तर— लालू जी को साजिश के तहत् सत्ता से हटाने के लिए चारा घोटाला से सम्बन्धित मामला दर्ज किया गया था। लालू जी मुख्यमंत्री रहते हुए सबसे पहले इस घोटाले को उजागर किया था।

जब घोटाले की बात होती है तो सुखराम, सुरेश कलमाड़ी, ए. राजा आदि को क्यों नहीं उछाला जाता? जबकि सबसे बड़ा घोटाला 2G स्पेक्ट्रम व कोयला घोटाला का था।

फरवरी 2012 राँची अदालत में (लालू जी के शब्दों में)

हजूर—हम ही ने जांच की अनुशंसा की कागज पत्तर उपलब्ध कराया और मुझे ही फंसा दिया गया। हम षड्यंत्र करते तो सारा कागज में आग नहीं लगा देते। हुजूर ई लोग कहता है कि हम स्विस बैंक में पइसा रखे हैं। स्विस जाने का हमको लूर अक्ल है। एनडीए वाला

लोग यूएन विश्वास को बोला गवर्नर बना देंगे और हमको फंसा दिया। सीबीआई ने उन्हें मुकदमें में झूठा फंसा दिया। यह घोटाला उनके कार्यकाल के पहले से चल रही थी।

प्रश्न— UPA – 2 में ममता दीदी जब रेलमंत्री थी तब लालू जी के रेलवे कार्य पर लोकसभा में श्वेत पत्र लायी थी ?

उत्तर— UPA – 1 में खुद प्रधानमंत्री लालू जी के रेलवे में कार्य पर प्रशंसा करते रहे है। वहीं UPA–2 में श्वेत पत्र लाने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? जाहिर है लालूजी को नीचा दिखाने की कोशिश की गई।

प्रश्न— अक्सर चर्चा होती है कि लालू प्रसाद ने रेलवे में आंकड़ों की बाजीगरी की हैं ?

उत्तर— अगर ये बाजीगरी होती तो अंग्रेजी दैनिक इंडियन एक्सप्रेस के सर्वेक्षण में उपरोक्त बातें (लेख में उल्लेखित) नहीं कही गई होती। साथ ही रेलवे में किए गए कायापलट के चमत्कार का अध्ययन करने देश-विदेश के मैनेजमेंट संस्थान के छात्र/छात्राएं/प्रोफेसर रेलवे का अध्ययन मैनेजमेंट गुर सीखने नहीं आते।

प्रश्न— कई बार सवाल उठे लालू जी महिला आरक्षण बिल के खिलाफ हैं ?

उत्तर— लालू जी महिला आरक्षण बिल के खिलाफ नहीं हैं बल्कि महिला आरक्षण बिल में दलित, पिछड़ों व अल्पसंख्यक महिलाओं को उचित स्थान मिले, तब बिल पास हो।

प्रश्न— बिहार विधान सभा व लोकसभा चुनाव में हार के बाद कुछ लोगों का कहना है—अब क्या होगा लालू का ? क्या लालू की पार्टी हमेशा के लिए सिमट गई ?

उत्तर—बिहार न कोई इराक है और न लालू कोई सद्दाम हुसैन कि अमरीकी फौजों ने मूर्ति तोड़ दी तो इसे पतन मान लिया जाया।

लालू की राजनीतिक जिजीविषा अद्भुत है, प्रतिकूल राजनीतिक परिस्थितियों से जूझकर निकलना और फिर अपनी हैसियत बरकरार रखना लालू जी को बखूबी आता है। उनकी अपनी राजनीतिक खूबियाँ है।

प्रश्न— बिहार में विपक्ष अक्सर अपवाह फैलाता है कि श्रीमती राबड़ी देवी शिक्षित नहीं हैं ?

उत्तर— जान लें, राबड़ी देवी शिक्षित है। बीजेपी मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती 5वीं तक शिक्षित है। तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री के कामराज अंगूठा छाप थे। वर्तमान में जेडीयू सांसद श्रीमती अश्वमेघ देवी 5वीं तक शिक्षित है। इसी क्रम में लोकपाल को लेकर चर्चा में आए श्री अन्ना हजारे केवल 8वीं तक शिक्षित हैं।

प्रश्न—अभी हाल ही में एक बिहार बीजेपी/जेडीयू नेता ने कहा—बड़ी मुस्किल से बिहार के जंगल राज से मुक्ति मिली है। हम चाहेंगे हमारा बीजेपी-जेडीयू गठबंधन बरकरार रहें ?

उत्तर— भाई, पहले जंगल राज था, अब मंगल राज है वाली राजनीतिक चालाकी बहुत दिनों तक बेरोकटोक चल नहीं पाता है। सुशासन बाबू कहते थे—राज्य में अमन चैन और कानून का राज कायम है। जरा BBC हिन्दी समाचार (19 मई, 2012) के आँकड़ों पर जरा गौर करें शायद जवाब मिल जाये—जब नीतिश जी सत्ता संभाले थे उससे पहले के 5 सालों में कुल संज्ञेय अपराध की संख्या 5 लाख 15 हजार 289 थी, जो नीतिश राज के 5 सालों में बढ़कर 7 लाख 78 हजार 315 हो गई। इसी तरह अपहरण की कुल संख्या 10 हजार 365 से बढ़कर 18 हजार 83 तक जा पहुँची। ये सरकारी आँकड़े हैं, विपक्षी अरोप नहीं।

आज लोक सभा में हमारी, आपकी आवाज उठाने वाला कोई नहीं है। क्योंकि संख्या में हम कमजोर है। इसलिए आम जनों, कार्यकर्ताओं से विनम्र आग्रह है लालू जी के हाथों को मजबूत करें ताकि देश, बिहार के लिए कुछ कर सकें। आम लोगों से मैं एक विनम्र सवाल करता हूँ क्या आपके बच्चे आपके रिश्तेदार, सगे सम्बन्धी कोई गलती करते हैं तो एक मौका देते हैं या नहीं ?

—बेवसाइट संपादक